✺ 5 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] दूसरे सतसंगों में कोई भी एम ऑबजेक्ट नहीं होती है, और ही धन-दौलत आदि सब कुछ गंवा कर भटकते रहते हैं। इस सतसंग में तुम भटकते नहीं हो। यह सतसंग के साथ-साथ स्कूल भी है। स्कूल में पढ़ना होता, भटकना नहीं। पढ़ाई माना कमाई। जितना तुम पढ़कर धारण करते और कराते हो उतनी कमाई है। इस सतसंग में आना माना फायदा ही फायदा।

2] गाया हुआ है– मनुष्य से देवता..... परन्तु कौन बनते हैं? हिन्दू तो सब देवता नहीं बनते। वास्तव में हिन्दू तो कोई धर्म है नहीं। आदि सनातन कोई हिन्दू धर्म नहीं है। कोई से भी पूछो कि हिन्दू धर्म किसने स्थापन किया? तो मूंझ जायेंगे। यह अज्ञान से नाम रख दिया है। हिन्दूस्तान में रहने वाले अपने को हिन्दू कहते हैं। वास्तव में इनका नाम भारत है, न कि हिन्दुस्तान। भारत खण्ड कहा जाता है, न कि हिन्दुस्तान खण्ड। है ही भारत।..... यह हिन्दुस्तान नाम तो फॉरेनर्स ने रखा है।

3] दिल में खुशी रहती है– बाबा हमको पढ़ाते हैं, महाराजा-महारानी बनाने। सत्य नारायण की सच्ची-सच्ची कथा यह है। आगे जन्म-जन्मान्तर तुम सत्य नारायण की कथा सुनते हो। परन्तु वह कोई सच्ची कथायें नहीं हैं। भक्ति मार्ग में कभी मनुष्य से देवता बन नहीं सकते। मुक्ति-जीवनमुक्ति को पा नहीं सकते। सभी मनुष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति पाते जरूर हैं।

4] बाप ही कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखलाता हूँ। सिवाए बाप के राजयोग सिखलाता हूँ। सिवाए बाप के राजयोग कोई सिखला नहीं सकते। बाप ही तुमको राजयोग की पढ़ाई पढ़ाते हैं। तुम फिर दूसरों को समझाते हो।

5] वास्तव में यह स्वदर्शन चक्र तो तुम ब्राह्मणों के लिए है। स्वदर्शन चक्रधारी ज्ञान से बनते हो। बाकी स्वदर्शन चक्र कोई मारने काटने का नहीं है। यह ज्ञान की बातें हैं। जितना तुम्हारा यह ज्ञान का चक्र फिरेगा, उतने तुम्हारे पान भस्म होंगे। बाकी सिर काटने की कोई बात नहीं। चक्र कोई हिंसा का नहीं हैं। यह चक्र तो तुमको अहिंसक बनता है। कहाँ की बात कहाँ ले गये हैं। सिवाए बाप के कोई समझा न सके।

6] स्कूल में जो पढ़ते हैं, उनको भटकना नहीं कहा जाता है। सतसंगों में मनुष्य कितना भटकते हैं। आमदनी कुछ भी नहीं होती, और ही घाटा, इसलिए उसको भटकना कहा जाता है। भटकते-भटकते धन-दौलत आदि सब गंवाए कंगाल बन पड़े हैं।

✺ योग-

1] अभी तुम आये हो सूर्यवंशी बनने के लिए न कि चन्द्रवंशी बनने के लिए। यह राजयोग है ना। तुम्हारी बुद्धि में है हम लक्ष्मी-नारायण बनेंगे।

2] बाप राजयोग सिखलाते हैं कि तुम पतित से पावन बन जाओ। अपने को आत्मा समझ निराकार बाप को याद करो तो तुम पवित्र बन जायेंगे और चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा सतयुग में बन जायेंगे।

✺ धारणा-

1] अब तुम ब्रह्मा के एडाप्टेड बच्चे ब्राह्मण हो गये। ब्राह्मण से देवता बनने के लिए पढ़ते हो। ऐसे नहीं, हिन्दू से देवता बनने के लिए पढ़ते हो। ब्राह्मण से देवता बनते हो। यह अच्छी रीति धारण करना है।

✺ सेवा-

1] जब भी कहाँ भाषण आदि करते हो तो यह समझाना अच्छा है। अभी है कलियुग, सब धर्म अभी तमोप्रधान हैं। चित्र पर तुम समझायेंगे तो फिर वह घमन्ड टूट जायेगा– मैं फलाना हूँ, यह हूँ....। समझेंगे, हम तो तमोप्रधान हैं। पहले-पहले बाप का परिचय दे दिया, फिर दिखाना है यह पुरानी दुनिया बदलनी है।